५. सुनो और गुनो

– *गोपालदास सक्सेना 'नीरज'*

परिचय

जन्म : १९२४, इटावा (उ.प्र.)
परिचय : गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी हिंदी साहित्यकार, शिक्षक, कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं । आपने मर्मस्पर्शी काव्यानुभूति और सहज-सरल भाषा द्वारा हिंदी कविता को एक नया मोड़ दिया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'गीत-अगीत', 'नीरज की गीतिकाएँ', 'नीरज की पाती', 'विभावरी', 'कारवाँ गुजर गया,' 'तुम्हारे लिए', 'प्राणगीत' (कविता संग्रह) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत आधुनिक दोहों में कवि नीरज जी ने विविध मूल्यों की बात की है । इनमें आपने लोगों की भलाई करने, प्रेम से रहने, कृतज्ञ बनने, अभिमान को त्यागने आदि के लिए प्रेरित किया है ।

गो मैं हूँ मँझधार में आज बिना पतवार,
लेकिन कितनों को किया मैंने सागर पार ।

जब हो चारों ही तरफ घोर घना अँधियार,
ऐसे में खद्योत भी पाते हैं सत्कार ।

टी. वी. ने हमपर किया यूँ छुप-छुपकर वार,
संस्कृति सब घायल हुई बिना तीर-तलवार ।

दूरभाष का देश में जब से हुआ प्रचार,
तब से घर आते नहीं चिट्ठी-पत्री-तार ।

ज्ञानी हो फिर भी न कर दुर्जन संग निवास,
सर्प-सर्प है, भले ही मणि हो उसके पास ।

भक्तों में कोई नहीं बड़ा सूर से नाम,
उसने आँखों के बिना देख लिए घनश्याम ।

तोड़ो, मसलो या कि तुम उसपर डालो धूल,
बदले में लेकिन तुम्हें खुशबू ही दे फूल ।

पूजा के सम पूज्य है जो भी हो व्यवसाय,
उसमें ऐसे रमो ज्यों जल में दूध समाय ।

हम कितना जीवित रहे इसका नहीं महत्त्व,
हम कैसे जीवित रहे यही तत्त्व अमरत्व ।

जीने को हमको मिले यद्यपि दिन दो-चार,
जिएँ मगर हम इस तरह हर दिन बनें हजार ।

अहंकार और प्रेम का, कभी न निभता साथ,
जैसे संग रहते नहीं संध्या और प्रभात ।

मात्र वंदना में नहीं फूल चढ़े दो-चार,
उसके चरणों में सदा चढ़ते शीश अपार ।

दिए तुझे माँगे बिना जिसने फल और छाँह,
काट रहा है मूढ़ तू, उसी वृक्ष की बाँह ।

–०–

शब्द वाटिका

मँझधार = नदी की धारा के बीच
पतवार = नाव को आगे-पीछे चलाने का साधन, चप्पू
खद्‌योत = जुगनू
प्रभात = सुबह
शीश = सिर
छाँह = छाया

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) परिणाम लिखो :

१. दूरदर्शन के आने का ------------
२. दूरभाष के प्रचार का ------------

(२) प्रस्तुत कविता में से अपनी पसंद के किन्हीं दो दोहों से मिलने वाली सीख लिखो ।

(३) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. सर्प	---------	छाँह
२. घनश्याम	---------	मणि
३. फूल	---------	सूरदास
४. वृक्ष	---------	खुशबू

(४) फूल तब भी सुगंध देते हैं

कल्पना पल्लवन

'चरित्र निर्माण में सत्संगति आवश्यक होती है' इसपर अपने विचार लिखो ।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित विरामचिह्नों का प्रयोग करके कोई संवाद लिखो :

; , । ? ! '........' "........."

उपयोजित लेखन

अपने विद्‌यालय में मनाए गए 'बाल दिवस' समारोह का वृत्तांत लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

मनुष्य के लिए वृक्षों से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की सूची बनाओ ।

I4HZLF